ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 81-82
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

साहित्य में किन्नर–विमर्श पर एक नजर

डॉ0 अनिता सिंह
समीक्षक / उपन्यासकार– संप्रति – प्राचार्य– महाराणा प्रताप महाविद्यालय बिलासपुर (छत्तीसगढ), भारत

Received-20.01.2024, Revised-27.01.2024, Accepted-01.02.2024 E-mail: sandysingh0921@gmail.com

सारांशः यह अक्षरसः सत्य है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में जो कुछ घटित होता है, उसे साहित्य नयी दिशा देता है। साहित्य में दलित –विमर्श, आदिवासी –विमर्श, स्त्री–विमर्श पर खूब लिखा–पढ़ा गया और विमर्श किया गया, जिसके माध्यम से समाज में कुछ जागरूकता भी आयी। अब इक्कीसवीं सदी के नव्य विमर्श, किन्नर–विमर्श को देर से ही सही किन्तु इस अछूते विषय को भी दिशा एवं गति देने में साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

कुंजीभूत शब्द– दर्पण, साहित्य, दलित –विमर्श, आदिवासी –विमर्श, स्त्री–विमर्श, जागरूकता, नव्य विमर्श, किन्नर–विमर्श।

यद्यपि किन्नर–विमर्श पर छह–सात वर्षो से ही सक्रियता और सन्नद्धता देखी गयी तथापि सन् 2002 में नीरजा माधव के "यमदीप" उपन्यास से साहित्य जगत में चर्चा में आया, परन्तु किन्नर–विमर्श के आन्दोलन में नया मोड़ तब आया जब 2015 में किन्नर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने स्वतः कलम थामकर अपने भोगे हुए यथार्थ को "मैं हिजड़ा.... मैं लक्ष्मी" शीर्षक आत्मकथा को वाणी दी। इसी क्रम में "पुरूष तन में फंसा मेरा नारी मन" शीर्षक आत्मकथा का महत्व भी उल्लेखनीय है जिसमें किन्नरों के जीवन के शून्य से क्षितिज तक पहुँचने की आत्मकथा है। उसके पूर्व सिनेमा के माध्यम से किन्नर–विमर्श के सूत्र यत्र– तत्र विकिर्ण हैं, विशेष रूप से महेन्द्र भीष्म की "किन्नर कथा" और "मैं पायल" दो उपन्यासों से यह विमर्श चर्चा के केन्द्र में आया और इसे गति मिली। तत्पश्चात् "वाङ.मय पत्रिका" अलिगढ़ और "विकास प्रकाशन" कानपुर के द्वारा इस विमर्श को गति देने का सिलसिला प्रारंभ हुआ। विशेषकर इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में कथा साहित्य के साथ–साथ गद्य और पद्य की अन्य विधाओं में भी इस पर केन्द्रित सृजनात्मक साहित्य लिखे गये जिनमें प्रमुख उपन्यास है – नीरजा माधव कृत 'यमदीप' (2002) कुछ वर्षो पश्चात डॉ. अनुसूया त्यागी– 'मैं भी औरत हूँ' (2005), महेन्द्र भीष्म कृत 'किन्नर कथा' (2012) और 'मैं पायल' (2016), प्रदीप सौरभ– 'तीसरी ताली' (2011), निर्मला भुराड़िया कृत 'गुलाम मण्डी' (2014), चित्रा मुद्गल 'पोस्ट बाक्स नं. 203 नाला सोपारा' (2018) भगवंत अनमोल – 'जिंदगी 50–50' (2017), गिरिजा भारती – 'अस्तित्व' (2018), सुभाष अखिल– दरमियान (2018), राजेश मलिक– 'आधा आदमी' (2018), मोनिका देवी– 'अस्तित्व की तलास में सिमरन' (2019),हरभजन सिंह मल्होत्रा – 'ऐ जिंदगी तुझे सलाम' (2019), विमला मल्होत्रा– 'किन्नर मुनिया मौसी' (2019), युक्ति शर्मा– 'श्रापित किन्नर' (2019) लता अग्रवाल– 'मंगलामुखी' (2020), अर्चना कोचर – 'किन्नर कथाःएक अंतहीन सफर' (2020), नीना शर्मा– 'मेरे हिस्से की धूप' (2020) गोपाल सिसोदिया– 'वह' (2020), रेनु बहल– 'मेरे होने में क्या बुराई है' (2020), शरद सिंह– 'शिखंडी : स्त्री देह से परे' (2020), जया जादवानी– 'देह कुठरिया' (2021), डॉ. अनिता सिंह– 'समय से आगे' (2021), लवलेश दत्त 'दर्द न जाने कोई' (2021), मालती मिश्रा– 'मंजरी' (2021), निर्मला सिंह – 'दीपशिखा', मनोज रूपड़ा,– प्रति संसार, राजकुमारी– 'द डार्केस्ट डेस्तिनी', रामसरूप शिखी– 'मैं शिखंडी नहीं', (पंजाबी).

किन्नर विमर्श संबंधी सभी उपन्यास इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में व्यवस्थित श्रृंखला के रूप में प्रकाशित होने प्रारंभ हुए। लगभग सभी उपन्यासों में किन्नर जीवन के संघर्षो को वर्णित करने का उपक्रम जारी रहा तथा उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक पहलुओं का बखूबी वर्णन किया जाने लगा। परन्तु स्वतंत्रता व समानता के मौलिक अधिकार जो भारतीय संविधान के आत्मतत्व हैं, इस आत्मतत्व से किन्नर समाज वंचित था क्योंकि इनका कोई जेण्डर नहीं था, जबकि ट्रांसजेण्डर भी प्रकृति की उपज हैं और मानव हैं फिर इनके साथ अमानवीयता क्यों? इसी क्यों के उत्तर और समस्या के निदान के रूप में किन्नर–विमर्श का सूत्रपात हुआ। इस संदर्भ में छत्तीसगढ़ के अगुवा, भाषाविद् डॉ. विनय कुमार पाठक की भावाभिव्यक्ति है – "यौनिकता पर नए सिरे से विचार और सकारात्मक सोच के व्यवहार ने समाज को सजग–सचेष्ट किया। परिणामतः अस्तित्व व अस्मिता के लिए सतत् संघर्षरत् किन्नरों को पहली बार सफलता तब मिली जब सन् 1994 में इन्हें मतदान को अधिकार मिला और प्रजातंत्र में इनकी सहभागिता दर्ज हुई अन्यथा इसके पूर्व तो इनके पास नागरिकता मताधिकार का परिचय पत्र तक अनुपलब्ध था। इस समय इन्हें स्त्री के खाने में रखकर अधिकार दिया गया। सन् 2014 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इन्हें थर्ड जेण्डर के रूप में परिभाषित कर इनका विकल्प निर्दिष्ट हुआ। छठें आर्थिक जनगणना में प्रथम बार इन्हें चिन्हित करके सामाजिक मान्यता प्रदान की गयी। इससे इनमें जागृति आयी फलतः ये संगठित होने लगे। परंपरा का संरक्षित और अस्मिता को अक्षुण्ण रखने में इन्होंने जागरूकता का परिचय दिया। समाज ने भी उनकी वास्तविकताओं के जाना–समझा फलतः उनके प्रति सकारात्मक और संवेदनात्मक पक्ष उजागर हुआ। विधायिका और न्यायपालिका ने इनके लिए महत्वपूर्ण कार्य किये हैं जिसके अंतर्गत अब ये भारतीय नागरिक की हैसियत से विद्यालय में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। आधार कार्ड, पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पेन कार्ड, पासपोर्ट, राशन कार्ड की सुविधाओं के भी अधिकारी हैं।संविधान के अनुच्छेद 14 के अनुरूप समानता, अनुच्छेद 15 के अनुसार, लिंग या सेक्स आधारित भेद पर प्रतिबंधित, 17 में छूआछूत निशेध निर्दिष्ट है। इन्हें बच्चा गोद लेने के साथ ही चिकित्सा द्वारा लिंग परिवर्तन का भी अधिकार प्राप्त है। किन्नरों के लिए आविधिक महत्वपूर्ण व प्रतिष्ठा की बात तब प्रमाणित हुई जब सन् 2016 में आयोजित उज्जैन के महाकुंभ में किन्नर अखाड़ा को पृथक पहचान मिली तथा इस अखाड़े में किन्नर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी को महामंडलेश्वर की उपाधि से महिमा मंडित किया गया।"[1]

इक्कीसवीं सदी में किन्नर–विमर्श पर बहुत कुछ लिखा जा रहा है, बदलाव की बयार चल रही है इनके लिए भी शिक्षा की

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

लौ जल रही है, नियम–कानून बन रहे हैं। समाज सेवी संस्थाएँ आगे आ रही हैं। किन्नरता को भी समाज में मान मिल रहा है, साहित्यकार विमर्शों के माध्यम से सृजनात्मक कार्य कर रहे हैं और किन्नर केन्द्रित सृजनात्मक साहित्य भी खूब लिखे गए और लिखे भी जा रहें हैं परन्तु समीक्षात्मक दृष्टि से अब तक कोई एक ऐसा ग्रंथ सम्मुख नहीं आया था, जिससे किन्नर केन्द्रित साहित्य का मूल्यांकन समग्र रूप से किया जा सके। इसी के साथ ही साथ किन्नर के इतिहास, संस्कृति, संघर्ष को लेकर मानवाधिकार तक की यात्रा को सूत्रबद्ध करते हुए एक संपूर्ण इतिवृत पर आधारित किसी एक किन्नर साहित्य की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसी अल्पता की आपूर्ति किन्नर आलोचना के शिखर पुरूष डॉ. विनय कुमार पाठक की आलोचनात्मक कृति ''किन्नर–विमर्श दशा और दिशा' (2019) ग्रंथ ने पहली बार वृहद् व्यथा का संस्पर्श कर विधागत साहित्य इतिहास का समग्रेतः विमर्श प्रस्तुत कर साहित्य जगत को चमत्कृत किया। तत्पश्चात ''लैंगिक विकलांग–विमर्श दशा और दिशा'' (2021) शीर्षक से प्रकाशित दूसरा ग्रंथ पुनर्पाठ के प्रवर्तन और अद्यन निदर्शन के साथ निष्पन्न है। इस ग्रंथ में सर्वत्र इनका चिंतन और दर्शन सूत्र कथन के रूप में प्रस्तुत ग्रंथ का गरिमा प्रदान कर प्रभावी प्रमाणित तो करता ही है साथ ही शब्दों के जादूगर के रूप में भाषिक औदात्य को भी दिग्दर्शित करता है।

बहुत लम्बे संघर्ष के पश्चात इन्हें शोषित पीड़ित जीवन से उबरने का अवसर मिला है। बावजूद इसके दिल्ली अभी दूर है। मंजिल तक पहुँचने के लिए अभी भी संघर्ष की आवश्यकता है। समाज से शोषित इस मानवता को सहृदय साहित्यकारों द्वारा लेखनी के माध्यम से समाज के समक्ष लाने का अथक प्रयास जारी है। इस संदर्भ में डॉ. लवलेश दत्त का चिंतन विचारणीय है – ''विगत कुछ वर्षो से साहित्य जगत में विभिन्न विमर्शों का दौर आरंभ हो चुका है। इन्हीं विमर्शों में सबसे ज्वलंत विषय किन्नर–विमर्श का है। यह सुखद है कि हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी किन्नर केन्द्रित पुसतकें लिखी जा रही हैं। इनमें किन्नर केन्द्रित आत्मकथा, उपन्यास, कहानी संग्रह, आलोचनात्मक पुस्तकें आदि निरंतर साहित्य जगत में अपनी दस्तक दे रही हैं। कई बार यह प्रश्न उठता है कि इस प्रकार के लेखन एवं प्रकाशन से क्या सचमुच हाशिए के समाज को लाभ होता है या केवल बाजारवाद के चलते लोग अपनी जेबें गर्म करने और चर्चा में बने रहने के स्वार्थ से ही ऐसे विमर्शों पर कलम चलाते हैं? लेकिन यदि हम समाज को गौर से देखें तो पाएंगे कि एक समय था जब उभयलिंगी, किन्नर, ट्रांसजेंडर, हिजड़ा, आदि को देखकर लोग मुँह फेर लेते थे या अश्लील भाषा में संबोधित करते थे, विमर्शों के बाद, से इसमें काफी हद तक कमी आई है।'[2]

समय बदल रहा है, जो विषय अनदेखे, अनजाने थे आज उन पर खुलकर चर्चा हो रही है। लोगों को समझ में आने लगा है किन्नर भी इंसान है। विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में स्त्री–पुरूष के बाद तीसरा कालम ट्रांसजेंडर का भी दिया जाने लगा है। साथ ही इनके जीवन पर टीवी धारावाहिक, वृत्तचित्र एवं फिल्में बनाने के साथ–साथ पत्र पत्रिकाओं के किन्नरों पर समर्पित अंक प्रकाशित किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक संगोष्ठियाँ हो रही है। यह सब इस बात का प्रमाण है कि साहित्य के अमूल्य योगदान से भविष्य में समाज से उपेक्षित तिरस्कृत यह वर्ग भी देश की प्रगति में हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर अपना योगदान देगा। यह मेरा मानना है क्योंकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी 2016 में खुलकर ट्रांसजेंडर अधिकारों का समर्थन किया है। अब उन्हें वह सब अधिकार मिलेगा। जो एक सामान्य व्यक्ति को मिला है।'

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. किन्नर–विमर्शः दशा और दिशा – डॉ. विनय कुमार पाठक, पृष्ठ 310
2. थर्ड जेंडर अतीत और वर्तमान– संपादक– डॉ. एम. फिरोज खान, फ्लैप से

*****